श्री नन्दीश्वर विधान

रचयिता

बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	श्री नन्दीश्वर विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम
प्रसंग	:	हाटकापुरा चन्देरी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 2019
आवृत्ति	:	1100
लागत मूल्य	:	15/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना संपर्क-94251-28817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

श्री संतोषकुमार-सरोज जैन
श्री सचिन-नंदनी जैन
श्री स्वप्निल-सुहाना जैन
श्री सौरभ-पारुल जैन
सुपारी वाले भोपाल (म.प्र.)

अपनी बात

''कार्तिक-फाल्गुन-साढ़ के अंत आठ दिन माहि'' जैसे ही यह पंक्ति स्मरण में आती है नन्दीश्वर द्वीप के जिनालयों की याद स्मृति पटल पर छा जाती है। परन्तु वहाँ पर पहुँचा नहीं जा सकता यह सोचकर यहीं पर अरिहन्त प्रभु के जिनमंदिर में जाकर नन्दीश्वर पूजन आदि के माध्यम से भगवान के गुणों की आराधना करते हैं। चँकि ''सर्व पर्व में बड़ों अठाई पर्व है'' तब कुछ नया और अतिरिक्त पूजन आदि करने की भावना मन में रहती है। यह जरूरी नहीं कि हर अष्टाह्निका पर्व में सभी जगह बड़े-बड़े विधान सम्पन्न हों। फिर भी कुछ अतिरिक्त करने की मन में भावना होती है। भक्तों की उसी भावना को देखते हुए संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य अनेक विधानों के रचयिता वात्सल्यमूर्ति बुंदेली संत मुनि श्री 108 सुव्रतसागरजी महाराज ने यह नन्दीश्वर विधान लघु रूप में तैयार किया। जिसमें भक्तगण प्रतिदिन नन्दीश्वर द्वीप के समस्त जिनालयों की भाव-भीनी वन्दना करते हुए अल्प समय में भक्ति आराधना कर सकें। पूज्य मुनिश्री की रचनाएँ भक्ति से भरी हुईं, अत्यन्त सरल शब्दों के साथ सँजोयी हुईं, गूढ़ रहस्यमयी विषयों से भरपूर रहती हैं, जिन्हें पढ़कर/सुनकर सभी भक्त आनंद से भर जाते हैं और बहुत कुछ स्वाध्याय भी कर लेते हैं। पूज्य मुनिश्री का आशीष हम भक्तों पर इसी प्रकार हमेशा बना रहे। कृति की संयोजना या प्रकाशन में यदि कहीं कोई अक्षरात्मक त्रुटि रह गई हो तो पाठकगण उन्हें सुधारकर पढ़ें एवं हमें अवगत अवश्य कराएँ ताकि अगले संस्करण में उन्हें सुधारा जा सके।

इस कृति से सभी श्रद्धालु अतिशयकारी धर्माजन करें इसी भावना के साथ...

– बा. ब्र. संजय, मुरैना

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः। ओम् नमः सिद्धेभ्यः।
पंचमेरु के ढाई द्वीप के, बाहर अष्टम द्वीप।
बावन जिन मंदिर से शोभित, वो नंदीश्वर द्वीप॥
जिनमें कुल छप्पन सौ सोलह, बिम्ब अकृतिम हों।
मन मंदिर में जिन्हें बिठाकर, अपने नमोऽस्तु हों ॥
ओम्.....
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
नंदीश्वर को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥५॥
ओम्.....

आरती

सहज बने सब सिद्ध जिनों की, जिन प्रतिमा भगवान की।
आओ! जगमग करें आरती, नन्दीश्वर जिन धाम की॥
नन्दीश्वर की एक दिशा में, अञ्जन गिरिवर इक जानो।
दधिमुख चार, आठ रतिकर पर, इक-इक है जिनगृह मानो॥
तेरह मन्दिर एक दिशा में, कुल बावन जिनधाम की।
आओ! जगमग.....
कार्तिक फाल्गुन आषाढ़ों के, अष्टाह्निक पर्वों में जा।
सभी देव परिवार सहित ही, करें महोत्सव नच गा-गा॥
पंचमेरु सह करें अर्चना, अष्टम द्वीप महान की॥
आओ! जगमग.....
वन्दित अर्चित इन्द्र सुरों से, जिन मन्दिर के पूज्य सभी।
जिनकी महिमा हम गाएँ तो, क्यों होंगे हैरान कभी॥
मंगलकारी सुव्रतदायी, जिनवर कृपा निधान की।
आओ! जगमग.....

नंदीश्वर पूजन

स्थापना (दोहा)

शाश्वत है अष्टाह्निका, जिनशासन के पर्व।
नंदीश्वर जिन बिम्ब को, करें नमोऽस्तु सर्व॥

(हरिगीतिका)

आषाढ़ कार्तिक और फाल्गुन, अंत में आठों दिना।
अष्टाह्निका के पर्व आते, अष्टमी से पूर्णिमा॥
सुर द्वीप नंदीश्वर पधारें, चैत्य चैत्यालय भजें।
ना जा सकें नर सो यहाँ पर, थापना कर हम भजें॥

(दोहा)

मन को नंदीश्वर बना, बिम्बों का कर ध्यान।
कर नमोऽस्तु हम पूजते, आओ! श्री भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-उत्तरदिक्षु विद्यमान द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(लय-नंदीश्वर श्री जिनधाम)

नंदीश्वर का कर ध्यान, नयन बरसते हैं।
झट दर्शन दो भगवान, भक्त तड़पते हैं॥
जल थल का पाकर तीर, प्रभु से जाएँ मिलें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

हों आकुल व्याकुल रोज, नंदीश्वर जाने।
पर जा न सकें हम लोग, तीरथ कर पाने।
दो आश्रय हर भव पीर, चेतन महक उठें।

छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

नंदीश्वर तीर्थ महान, बावन चैत्यालय।
सिद्धों जैसे भगवान्, झलके सिद्धालय॥
पूरी हो इच्छा तीव्र, अक्षय धाम चलें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

नंदीश्वर गोलाकार, जैसे फूल खिले।
सुर भौरों सम गुंजार, करके पूज चले॥
हम हरें काम का कीच, परमानंद चखें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

नंदीश्वर का रसपान, जो भी कर लेते।
भोजन का तज रसपान, आतम चख लेते॥
भोगों का त्यागें बीज, निज का स्वाद चखें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

नंदीश्वर अष्टम द्वीप, झिलमिल झलक रहा।
ले भक्त भक्ति का दीप, प्रभु को निरख रहा॥
प्रभु मोती हम हैं सीप, उज्ज्वल रूप सजें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

नंदीश्वर इतना शुद्ध, जैसे ज्ञायक हों।
हम भजकर बनें विशुद्ध, निज के लायक हों॥
हम कर्म हरें बन वीर, करके ध्यान भजें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

नंदीश्वर के बागान, रत्नत्रय फल दें।
हर के सारे अज्ञान, उज्ज्वल सुख फल दें॥
हों कर्मों से भयभीत, निज शृंगार करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े।
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्व दिशा सम्बन्धी अर्घ्य

(हाकलिका)

पूर्व दिशा का नंदीश्वर, साँवलिया अंजन गिरि पर।
जा न सकें हम सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-अंजनपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

नंदावापी पूरव में, दधिमुख गिरि जिन भवन बनें।
देव भ्रमर बन बिम्ब भजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-प्रथमदधिमुख-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ -सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

प्रथम कोण में जो रतिकर, रत्न जिनालय है जिस पर।
जिनके बिम्ब देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-प्रथमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ -सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

दूजे कोने का रतिकर, जिस पर जिनवर का मन्दिर।
रंग बिरंगे सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-द्वितीयरतिकर- पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

नंदवती फिर दक्षिण की, दधिमुख गिरि पर मन्दिर जी।
जिनवर बिम्ब देव पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-द्वितीयदधिमुख-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ -सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

दक्षिण का कोना पहला, रतिकर पर जिन भवन भला।
प्रातिहार्यमय सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-तृतीयरतिकरपर्वतस्थितजिनालयस्थ -सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

दक्षिण का कोना दूजा, रतिकर पर हो जिन पूजा।
सुर परिवार सहित पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-चतुर्थरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ -सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

नन्द-उत्तरा पश्चिम की, दधिमुख गिरि पर भगवन जी।
जिन्हें खुशी से सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-तृतीयदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

प्रथम कोण जो पश्चिम का, रतिकर पर गृह भगवन का।
मंगल द्रव्य सहित पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-पंचमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

पश्चिम का दूजा कोना, रतिकर पर जिन भवन बना।
उत्सव करके सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-षष्टरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

नंदीघोषा उत्तर की, दधिमुख गिरि पर जिनवर जी।
दिव्य द्रव्य ले सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-चतुर्थदधिमुख-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

प्रथम कोण जो उत्तर का, जहाँ जिनालय रतिकर का।
सुर कर्तव्य समझ पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-सप्तमरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

दूजा कोना उत्तर का, रतिकर पर गृह जिनवर का।
मुक्ति प्राप्ति को सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-अष्टमरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पूर्व दिशा नन्दीश्वरा, इक अंजन दधि चार।
आठों रतिकर मिल हुए, कुल तेरह सुखकार॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पूर्वदिक्संबंधि-सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

दक्षिण दिशा सम्बन्धी अर्घ्य

(सखी)

नंदीश्वर के दक्षिण में, अंजनगिरि के मन्दिर में।
जिन रत्न बिम्ब सुर पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ दक्षिण दिक्संबंधिअंजनपर्वतस्थितजिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

अरजा वापी पूरब में, है दधिमुख गिरिवर जिसमें।
जिन चैत्य देवता पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-प्रथमदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

अरजा का कोना पहला, जिसमें है रतिकर उजला।
जिन मूरत सुरगण पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिण दिक्संबंधि-प्रथमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

फिर कोण दूसरा प्यारा, रतिकर पर प्रभु का द्वारा।
सुर करें महोत्सव पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ- दक्षिणदिक्संबंधि-द्वितीयरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

विरजा वापी दक्षिण की, जिसमें दधिमुख गिरिवरजी।
जिन मूर्ति वहाँ सुर पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिण दिक्संबंधि-द्वितीयदधिमुख-पर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

पहला कोना विरजा का, जिनमें रतिकर प्यारा सा।
प्रभु बिम्ब वहाँ सुर पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-तृतीयरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

दूजे रतिकर के जिनवर, है प्रातिहार्यमय मनहर।
वह देव पर्व कर पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-चतुर्थरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

है वापि अशोका पश्चिम, जिसमें गिरि दधिमुख उत्तम।
सुर बिम्ब वहाँ के पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-तृतीयदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

अशोका का कोना पहला, गिरि रतिकर वहाँ सुनहला।
सुर बिम्ब वहाँ के पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-पंचमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

दूजे कोने का रतिकर, है जिन गृह जिन पर।
जिनदेव देवता पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-षष्टम-रतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

है वीतशोका उत्तर में, दधिमुख गिरि पर मन्दिर में।
जिननाथ देवता पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-चतुर्थदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

वीतशोका पहला कोना, जिसमें रतिकर जिन भवना।
जिन-ईश देवता पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-सप्तमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

दूजे रतिकर का मन्दिर, है शाश्वत जिनमें जिनवर।
वह भक्त अमर जा पूजें, हम करके नमोऽस्तु पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-अष्टमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

दक्षिण का नन्दीश्वरा, इक अंजन दधि चार।
आठों रतिकर मिल हुए, कुल तेरह सुखकार॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-दक्षिणदिक्संबंधि-सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

पश्चिम दिशा सम्बन्धी अर्घ्य

(चौपाई)

पश्चिम वाला जो नन्दीश्वर, अंजन सा अंजन गिरि जिस पर।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अंजनपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

वहाँ पूर्व में वापी विजया, जिनमें दधिमुख गिरिवर सदया।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-प्रथमदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

प्रथम कोण जो विजया वाला, जिसमें रतिकर रत्नों वाला॥
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-प्रथमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

विजया का जो कोना दूजा, उसके रतिकर की हो पूजा।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-द्वितीयरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

वैजयन्ति वापी दक्षिण में, दधिमुख गिरि जिसके मध्यम में।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-द्वितीयदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

वैजयन्ति का प्रथम कोण जो, जिसमें रतिकर खड़े मौन हो।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-तृतीयरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

दूजे कोने वाला रतिकर, ऊँचे-ऊँचे शोभें भूपर।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-चतुर्थरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

जयंतिवापी है पश्चिम में, दधिमुख गिरि जिसके मध्यम में।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-तृतीयदधिमुख-पर्वतस्थित-जिनालयस्थ सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

जयन्ति का जो कोना पहला, जिसमें रतिकर मणिमय उजला।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-पंचमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

कोण दूसरे के रतिकर पर, वीतरागता शोभित जिस पर।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-षष्टरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

अपराजित वापी उत्तर में, दधिकर गिरिवर नंदीश्वर में।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-चतुर्थदधिमुखपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

अपराजित के प्रथम कोण में, रतिकर चमके तीन भौन में।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-सप्तमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

दूजे कोने का रतिकर जो, जिनशासन का है भूघर वो।
जिनमन्दिर जिनवर सुर पूजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-अष्टमरतिकरपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पश्चिम का नन्दीश्वरा, इक अंजन दधि चार।
आठों रतिकर मिल हुए, कुल तेरह सुखकार॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-पश्चिमदिक्संबंधि-सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

उत्तर दिशा सम्बन्धी अर्घ्य

(दोहा)

नंदीश्वर उत्तम दिशा, अंजनगिरि के धाम।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु शुभ काम॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-अंजनपर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

रम्या वापी पूर्व में, जिसमें दधिमुख एक।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु सिर टेक॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-प्रथमदधिमुख-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

रम्या का कोना प्रथम, जिसमें रतिकर लाल।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु त्रयकाल॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-प्रथमरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

दूजे कोने का रहा, रतिकर बड़ा महान।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-द्वितीयरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

रमणीया वापी जहाँ, इक दधिमुख गिरिराज।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु भी आज॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-द्वितीयदधिमुख-पर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

प्रथम कोण रमणीय का, रतिकर जहाँ गिरीश।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-तृतीयरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥6॥

दूजे रतिकर पर वसे, जिनशासन के नाथ।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-चतुर्थरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥7॥

सुप्रभा वापी में खड़ा, दधिमुख पर्वत धाम।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु अविराम॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-तृतीयदधिमुख-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥8॥

सुप्रभा का कोना प्रथम, रतिकर खड़ा अडोल।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु के बोल॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-पंचमरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥9॥

दूजा रतिकर शोभता, अनादिनिधन विशेष।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु निःशेष॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-षष्टरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥10॥

सर्वतोभद्रा वापी में, है दधिमुख गिरिरूप।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु सुख रूप॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-चतुर्थदधिमुख-पर्वतस्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥11॥

सर्वतोभद्रा का प्रथम, रतिकर शिखर सुदूर।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सप्तमरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥12॥

दूजे कोने पर खड़ा, रतिकर कर प्रभु राग।
जिनमन्दिर सुर पूजते, हो नमोऽस्तु सौभाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-अष्टमरतिकर-पर्वत-स्थित-जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥13॥

पूर्णार्घ्य

उत्तर का नन्दीश्वरा, इक अंजन दधि चार।
आठों रतिकर मिल हुए, कुल तेरह सुखकार॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपस्थ-उत्तरदिक्संबंधि-सर्वजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

पंचमेरू सम्बन्धी अर्घ्य

(दोहा)

एक जिनालय में रहे, बिम्ब एक सौ आठ।
सत्रह सौ अठ्ठाईस कुल, भजें मेरु के नाथ॥

(ज्ञानोदय)

तीन लोक के मध्य लोक के, जंबूद्वीप का केन्द्रक सा।
भू से ऊँचे चार-वनोंमय, प्रथम सुदर्शन मेरु वसा॥

भद्रसाल नन्दन सुमनस वन, पाण्डुक वन ऊपर क्रमशः।
हर वन में हैं चार दिशा के, चार जिनालय कुल सोलह॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

क्षेत्र धातकीखण्ड पूर्व में, मेरु दूसरा विजय रहा।
पूरा वैभव प्रथम मेरु सम, रत्नों वाला निलय रहा॥
बिम्ब पाँच सौ धनुष उच्च को, देव पर्व कर पूज रहे।
मेरु बिम्ब को अर्घ चढ़ाकर, अपने नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री विजयमेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

क्षेत्र धातकीखण्ड पश्चिमी, मेरु तीसरा अचल रहा।
रत्नत्रय सम शोभा जिसकी, पूजन को मन मचल रहा॥
पद्मासन के जिनबिम्बों को, देव पर्व कर पूज रहे।
मेरु बिम्ब को अर्घ चढ़ाकर, अपने नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री अचल मेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

पुष्करार्ध की पूर्व दिशा में, चौथा मन्दर मेरु रहा।
कमल फूल जैसा सुन्दर है, चारु चन्द्र सम धन्य रहा॥
बिना बनाए जिन बिम्बों को, देव पर्व कर पूज रहे।
मेरु बिम्ब को अर्घ चढ़ाकर, अपने नमोऽस्तु गूँज रहे।

ॐ ह्रीं श्री मंदर मेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

पश्चिम पुष्करार्ध में पंचम, मेरु विद्युन्माली है।
पंचम गति का रहा प्रदाता, मनती रोज दिवाली है॥
रत्नों वाले जिन बिम्बों को, देव पर्व कर पूज रहे।
मेरु बिम्ब को अर्घ चढ़ाकर, अपने नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्माली मेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥5॥

पूर्णार्घ्य (दोहा)

पंचमेरु में बिम्ब हैं, छ्यासी सौ चालीस।
देव पूज्य को हम भजें, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

कृत्रिम नन्दीश्वर पंचमेरू अर्घ्य

तीर्थ जबलपुर मढ़ियाजी में, है सम्मेदशिखर में जो।
है भोपाल जैन नगरी में, सोनागिरि में शोभें जो॥
इत्यादिक मानव निर्मित जो, पंचमेरू नंदीश्वर हैं।
अलग-अलग वा साथ-साथ में, नमोऽस्तु अर्घ्य समर्पित हैं॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिम नन्दीश्वर-पंचमेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं...।

समुच्चय पूर्णार्घ्य (दोहा)

छ्यासी सौ चालीस भज, पंचमेरु के नाथ।
छप्पन सौ सौलह भजें, नन्दीश्वर के साथ॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम नन्दीश्वर-पंचमेरु सम्बन्धी समस्त जिनबिम्बेभ्यो समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा)

त्रय अष्टाह्निक पर्व में, नंदीश्वर जिनधाम।
देव भजें साक्षात् हम, भजें यहीं कर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! नंदीश्वर की, जय हो! सभी मंदिरों की।
जय हो! जय हो! वहाँ विराजित, चैत्यालय जिन बिम्बों की॥
देव वहाँ त्रय अष्टाह्निक में, दिव्य द्रव्य ले जाते हैं।

भक्ति-भाव से करें अर्चना, हम तो यहीं रचाते हैं॥1॥
अनगिन दीप सागरों से जो, निर्मित मध्यलोक प्यारा।
उसका अष्टम दीप मनोहर, नंदीश्वर गोलाकारा।
एक अरब त्रेसठ करोड़ अरु, चौरासी लाखों योजन।
एक दिशा में इतना फैला, चंदा जैसा आभूषण॥2॥
जहाँ चार दिशि में अंजन वन, चार-ढोल सम बढ़िया हैं।
एक-एक अंजन सम्बन्धी, चार-चार बावड़ियाँ हैं॥
मध्य बावड़ी में इक दधिमुख, वन हैं कुल दधिमुख चारों।
वहाँ बावड़ी के दो कोने, जिनके रतिकर वन आठों॥3॥
एक दिशा में इक अंजन वन, दधिमुख चार आठ रतिकर।
कुल तेरह वन चार बावड़ी, जोड़ो चारों को गिनकर॥
कुल बावन वन की शिखरों पर, बावन पूज्य जिनालय हों।
इक मंदिर में बिम्ब एक सौ-आठ रहे जिनकी जय हों॥4॥
पाँच हजार छः सौ सोलह कुल, बिम्ब रहे नंदीश्वर में।
उच्च पाँच सौ धनुष रहे जो, रत्नमयी पद्मासन में॥
नीले केश, दांत हीरे सम, ओठ रहे मूंगा जैसे।
श्याम श्वेत हैं नयन मनोहर, हाथ पैर कोयल जैसे॥5॥
बिम्ब रहे यों देख रहे ज्यों, बोल रहे जैसे लगते।
जिनके आगे कोटि-कोटि भी, सूर्य चाँद फीके पड़ते॥
प्रातिहार्य मंगल द्रव्यों मय, सुरा-सुरों से पूजित हैं।
वीतरागता की शिक्षा दें, पुण्य धर्म से संचित हैं॥6॥
जिनके वर्णन कर पाने में, सरस्वती थक जाती है।
इसीलिए तो श्रद्धा अपनी, सादर शीश झुकाती है॥

पाप नष्ट कर पुण्य प्राप्त कर, सुख पाने अर्हंत बनें।
नंदीश्वर की यात्रा करके, 'सुव्रत' सिद्ध महंत बनें॥7॥

(सोरठा)

नंदीश्वर जिन धाम, देव भजें त्यौहार कर।
हम भी करें प्रणाम, मोक्ष चलें भव पार कर॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नंदीश्वर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नंदीश्वर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

गणतन्त्र दिवस की जनवरी, दो हजार उन्नीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु-प्रभु को नत शीश॥
नगर गढ़ाकोटा जहाँ, शान्तिनाथ का धाम।
छन्द मंत्र पूरे वहीं, नन्दीश्वर विधान॥

===